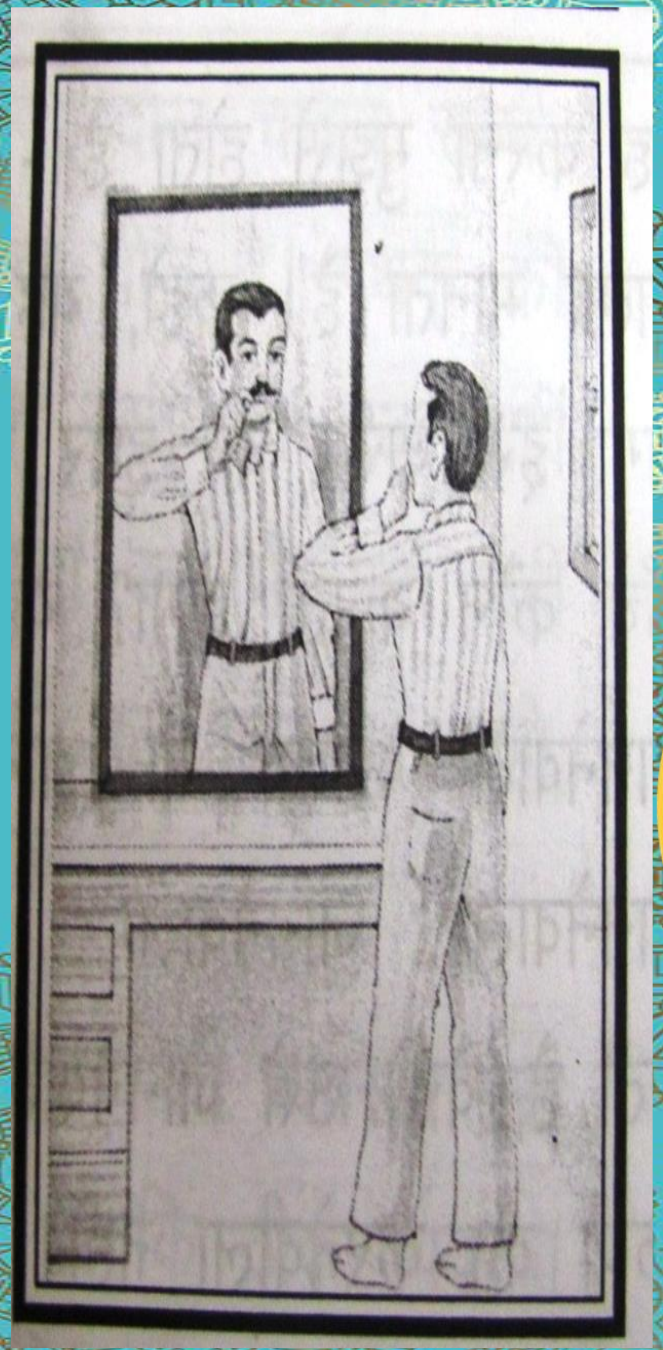

आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती

वेद मार्गणा

Presentation Developed By:
Smt. Sarika Vikas Chhabra

अपगत वेदी

पुरिसिच्छिसंढवेदोदयेण पुरिसिच्छिसंढओ भावे। णामोदयेण दव्वे, पाएण समा कहिं विसमा॥271॥

- अर्थ - पुरुष, स्त्री और नपुंसक वेदकर्म के उदय से भावपुरुष, भावस्त्री और भावनपुंसक होता है और
- नामकर्म के उदय से द्रव्यपुरुष, द्रव्यस्त्री, द्रव्यनपुंसक होता है।
- सो यह भाववेद और द्रव्यवेद प्रायः करके समान होता है, परन्तु कहीं-कहीं विषम भी होता है ॥271॥

www.JainKosh.org

वेद

भाव वेद

जीव के तीव्र मोह से उत्पन्न स्त्री, पुरुष, नपुंसक-भावरूप परिणाम

द्रव्य वेद

पुरुष, स्त्री, नपुंसकरूप शरीर

www.JainKosh.org

द्रव्य व भाव वेद में समता-विषमता कहाँ संभव?

समानता ही होती है

- देव
- नारकी
- भोगभूमि के मनुष्य, तिर्यंच
- एकेन्द्रिय एवं विकलेन्द्रिय तिर्यंच
- सम्मूर्च्छन मनुष्य एवं तिर्यंच

विषमता संभव है

- कर्मभूमि के मनुष्य एवं तिर्यंच

नोट — जहाँ तीनों वेद पाये जाते हैं वहीं वेद विषमता होती है ।

www.JainKosh.org

वेदस्सुदीरणाए, परिणामस्स य हवेज्ज संमोहो।
संमोहेण ण जाणदि, जीवो हि गुणं व दोसं वा॥272॥

- अर्थ - वेद नोकषाय के उदय तथा उदीरणा होने से जीव के परिणामों में बड़ा भारी मोह उत्पन्न होता है और इस संमोह के होने से यह जीव गुण अथवा दोष को नहीं जानता ॥272॥

पुरुगुणभोगे सेदे, करेदि लोयम्मि पुरुगुणं कम्मं।
पुरुउत्तमो य जम्हा, तम्हा सो वण्णिओ पुरिसो॥273॥

- अर्थ - उत्कृष्ट गुण अथवा उत्कृष्ट भोगों का जो स्वामी हो, अथवा
- जो लोक में उत्कृष्ट गुणयुक्त कर्म को करे, अथवा
- जो स्वयं उत्तम हो
- उसको पुरुष कहते हैं ॥273॥

www.JainKosh.org

निरुक्ति से 'पुरुष' कौन है ?

पुरु गुण शेते	• उत्कृष्ट सम्यग्ज्ञानादि का स्वामी होता है ।
पुरु भोग शेते	• उत्कृष्ट इंद्रादिक भोगों का भोक्ता होता है ।
पुरुगुण करोति	• धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप पुरुषार्थ को करता है।
पुरु उत्तमे शेते	• उत्तम परमेष्ठी के पद में स्थित होता है ।

('शीङ्' धातु का अर्थ स्वामी, भोगना, करना, स्थित होना आदि अर्थ हैं ।
इसलिए ऐसे अनेक अर्थ किये हैं ।)

पुरुष वेद

सामान्य स्वरूप

- पुरुष वेद नामक नोकषाय के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- पुरुष वेद कहते हैं ।

➢ कैसी अवस्था-विशेष ?

- स्त्री के साथ रमण की इच्छा ।

कषाय की तीव्रता का दृष्टांत

- तृण (तिनके) की अग्नि

www.JainKosh.org

छादयदि सयं दोसे, णयदो छादेदि परं वि दोसेण।
छादणसीला जम्हा, तम्हा सा वण्णिया इत्थी॥274॥

- अर्थ - जो मिथ्यादर्शन, अज्ञान, असंयम आदि दोषों से अपने को आच्छादित करे और
- मृदु भाषण, तिरछी चितवन आदि व्यापार से जो दूसरे पुरुषों को भी हिंसा, अब्रह्म आदि दोषों से आच्छादित करे,
- उसको आच्छादन-स्वभावयुक्त होने से स्त्री कहते हैं ॥274॥

www.JainKosh.org

निरुक्ति से 'स्त्री' कौन है ?

दोषैः छादयति

अर्थात् दोषों से आच्छादित करे

स्वयं को

दूसरों को

मिथ्यात्व, असंयम आदि से

वशकर हिंसादिक पापों से

इस प्रकार आच्छादन-रूप स्वभाव होने से 'स्त्री' कहा जाता है ।

स्त्री वेद

सामान्य स्वरूप

- स्त्री वेद नामक नोकषाय के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- स्त्री वेद कहते हैं ।

➢ कैसी अवस्था-विशेष ?

- पुरुष के साथ रमण की इच्छा ।

कषाय की तीव्रता का दृष्टांत

- कारीष (कंडे) की अग्नि

णेवित्थी णेव पुमं, णउंसओ उहयलिंगवदिरित्तो।
इट्ठावग्गिसमाणग-वेदणगुरुओ कलुसचित्तो॥275॥

- अर्थ - जो न स्त्री हो और न पुरुष हो ऐसे दोनों ही लिंगों से रहित जीव को नपुंसक कहते हैं।
- यह अवा (भट्टा) में पकती हुई ईंट की अग्नि के समान तीव्र कामवेदना से पीड़ित होने से प्रतिसमय कलुषित चित्त रहता है ॥275॥

www.JainKosh.org

निरुक्ति से ‘नपुंसक’ कौन है ?

स्त्री-पुरुष दोनों के चिह्नों से रहित

दाढ़ी, मूँछ और स्तन आदि पुरुष और स्त्री के चिह्नों से रहित

तीव्र काम पीड़ा से भरा हुआ

www.JainKosh.org

नपुंसक

सामान्य स्वरूप

- नपुंसक वेद नामक नोकषाय के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- नपुंसक वेद कहते हैं ।

➢ कैसी अवस्था-विशेष ?

- युगपत् दोनों के साथ रमण की इच्छा ।

कषाय की तीव्रता का दृष्टांत

- अवा (भट्टे) में पकती हुई ईंट की अग्नि

तिणकारिसिट्ठुपागग्गि-सरिसपरिणामवेदणुम्मुक्का।
अवगयवेदा जीवा, सगसंभवणंतवरसोक्खा॥276॥

- अर्थ - तृण की अग्नि, कारीष अग्नि, इष्टपाक अग्नि (अवा की अग्नि) के समान वेद के परिणामों से रहित जीवों को अपगतवेद कहते हैं।
- ये जीव अपनी आत्मा से ही उत्पन्न होने वाले अनंत और सर्वोत्कृष्ट सुख को भोगते हैं ॥276॥

www.JainKosh.org

अपगत वेदी (वेदरहित)

तीन प्रकार की कामवेदनारूप संक्लेशरहित

अपनी आत्मा से उत्पन्न अनाकुल, अनंत, सर्वोत्कृष्ट सुख के भोक्ता

नवें गुणस्थान के अपगतवेद भाग से गुणस्थानातीत सिद्ध तक

www.JainKosh.org

वेदों के स्वामी

	द्रव्य-वेद	भाव-वेद
पुरुष वेद	1-14	1-9
स्त्री वेद	1-5	1-9
नपुंसक वेद	1-5	1-9
अपगतवेदी	9-14	होता नहीं

www.JainKosh.org

जोइसियवाणजोणिणि-तिरिक्खपुरुसा य सण्णिणो जीवा।
तत्तेउपम्मलेस्सा, संखगुणूणा कमेणेदे॥277॥

- अर्थ - ज्योतिषी, व्यंतर, योनिनी तिर्यंच, तिर्यंच पुरुष, संज्ञी तिर्यंच, तेजोलेश्यावाले संज्ञी तिर्यंच तथा पद्मलेश्यावाले संज्ञी तिर्यंच जीव क्रम से उत्तरोत्तर संख्यातगुणे-संख्यातगुणे हीन हैं ॥277॥

www.JainKosh.org

1	ज्योतिषी देव	$\frac{\text{जगतप्रतर}}{65536 \text{ प्रतरांगुल}}$
2	व्यंतर देव	$\frac{\text{जगतप्रतर}}{81000 \times 10^7 \times 65 = \text{ प्रतरांगुल}}$
3	योनिनी तिर्यंच	$\frac{\text{जगतप्रतर}}{4 \times 81000 \times 10^7 \times 65 = \text{ प्रतरांगुल}}$
4	पुरुषवेदी तिर्यंच	$\frac{\text{योनिनी तिर्यंच}}{\text{संख्यात}}$
5	संज्ञी तिर्यंच	$\frac{\text{पुरुषवेदी तिर्यंच}}{\text{संख्यात}}$
6	पीत लेश्यी तिर्यंच	$\frac{\text{संज्ञी तिर्यंच}}{\text{संख्यात}}$
7	पद्म लेश्यी तिर्यंच	$\frac{\text{पीत लेश्यी तिर्यंच}}{\text{संख्यात}}$

अर्थात् ये सभी राशियाँ संख्यात गुणी - संख्यात गुणी हीन हैं ।

इगिपुरिसे बत्तीसं, देवी तज्जोगभजिददेवोघे।
सगगुणगारेण गुणे, पुरुसा महिला य देवेसु॥278॥

- अर्थ - देवगति में एक देव की कम-से-कम बत्तीस देवियाँ होती हैं। इसलिये देव और देवियों के जोड़रूप तेतीस का समस्त देवराशि में भाग देने से जो लब्ध आवे उसका अपने-अपने गुणाकार के साथ गुणा करने से देव और देवियों का प्रमाण निकलता है ॥278॥

www.JainKosh.org

देव-देवियों की संख्या का विभाजन

देव	$\frac{\text{देवगति की राशि}}{33} \times 1$	क्योंकि अधिकांश देवों के 32 देवियाँ होती हैं इसलिये 32 + 1 = 33 से भाग दिया ।
देवियाँ	$\frac{\text{देवगति की राशि}}{33} \times 32$	

अर्थात् देवगति में लगभग 97% देवियाँ हैं, देव 3% हैं।

www.JainKosh.org

देवेहि सादिरेया, पुरिसा देवीहि साहिया इत्थी।
तेहि विहीण सवेदो, रासी संढाण परिमाणं॥279॥

- अर्थ - देवों से कुछ अधिक (मनुष्य और तिर्यंच गति सहित) पुरुषवेदवालों का प्रमाण है और
- देवियों से कुछ अधिक (मनुष्य तथा तिर्यंच गति सहित) स्त्रीवेदवालों का प्रमाण है।
- सवेद राशि में से पुरुषवेद तथा स्त्रीवेद का प्रमाण घटाने से जो शेष रहे वह नपुंसकवेदियों का प्रमाण है ॥279॥

www.JainKosh.org

संख्या - पुरुष वेदी

देवों से कुछ अधिक

= देव + पुरुष वेदी तिर्यंच + पुरुष वेदी मनुष्य

$$= \frac{\text{जगतप्रतर}}{65 = \text{प्रतरांगुल} \times 33} + \frac{\text{योनिनी तिर्यंच}}{\text{संख्यात}} + \frac{(\text{बादाल})^3}{4} -$$

अर्थात् देवों की संख्या से कुछ अधिक $= \frac{\text{जगतप्रतर}}{65 = \text{प्रतरांगुल} \times 33} ++$

संख्या – स्त्री वेद

देवियों से कुछ अधिक

= देवियाँ + स्त्री-वेदी तिर्यंच + स्त्री-वेदी मनुष्य

$$= \frac{\text{जगतप्रतर} \times 32}{65 = \text{प्रतरांगुल} \times 33} + \frac{\text{व्यंतर देव}}{\text{संख्यात}} + \frac{(\text{बादाल})^3 \times 3}{4}$$

अर्थात् देवियों की संख्या से कुछ अधिक $= \frac{\text{जगतप्रतर} \times 32}{65 = \text{प्रतरांगुल} \times 33}$ ++

www.JainKosh.org

संख्या – नपुंसक वेदी

नपुंसक वेदी =

सवेद राशि – पुरुष वेदी – स्त्री वेदी

(प्रथमगुणस्थान से 9वें गुणस्थान के सवेदभाग तक के जीव सवेदी हैं । तो सवेद राशि संसारी राशि से कुछ कम हुई ।)

१३- – देवों से कुछ अधिक – देवियों से कुछ अधिक

(संसारी राशी की संदृष्टि १३ है । कुछ कम के लिए - का चिह्न लिखा है ।)

१३ ≡

(१३ में से तीनों राशियों को कम करने के लिए ≡ संदृष्टि की है ।)

www.JainKosh.org

तीनों वेदवालों की संख्या

वेद	सामान्य प्रमाण	विशेष प्रमाण	अल्प-बहुत्व
पुरुष वेद	असंख्यात	देवों से कुछ अधिक	सबसे कम
स्त्री वेद	असंख्यात	देवियों से कुछ अधिक	संख्यात गुणा
अपगतवेदी	अनंत	सिद्ध + 9वे से 14वे गुण.	अनंत गुणा
नपुंसक वेद	अनंत	कुल सवेद राशि – पुरुष और स्त्री वेदी	अनंत गुणा

www.JainKosh.org

गब्भणपुइत्थिसण्णी, सम्मुच्छणसण्णिपुण्णगा इदरा।
कुरुजा असण्णिगब्भज-णपुइत्थीवाणजोइसिया॥280॥
थोवा तिसु संखगुणा, तत्तो आवलिअसंखभागगुणा।
पल्लासंखेज्जगुणा, तत्तो सव्वत्थ संखगुणा॥281॥

- अर्थ - 1-2-3 गर्भज संज्ञी नपुंसक, पुल्लिंगी तथा स्त्रीलिंगी, 4-5 सम्मूर्च्छन संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त, 6 भोगभूमिया, 7-8-9 असंज्ञी गर्भज नपुंसक, पुल्लिंगी तथा स्त्रीलिंगी तथा 10 व्यंतर और 11 ज्योतिषी – इन ग्यारह स्थानों को क्रम से स्थापन करना चाहिये।
- जिसमें पहला स्थान सबसे स्तोक है, और उससे आगे के तीन स्थान संख्यातगुणे-संख्यातगुणे हैं। पाँचवाँ स्थान आवली के असंख्यातवें भाग गुणा है। छठा स्थान पल्य के असंख्यातवें भागगुणा है। इससे आगे के पाँचों ही स्थान क्रम से संख्यातगुणे-संख्यातगुणे हैं ॥280-281॥

www.JainKosh.org

वेद संबंधी कुछ अन्य राशियों का अल्प-बहुत्व

नोट: पूर्व-पूर्व की राशि से आगे-आगे की राशि गुणाकाररूप है

संज्ञी गर्भज

1. नपुंसक

2. पुरुष

3. स्त्री

संख्यात गुणा

संख्यात गुणा

www.JainKosh.org

संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन

4.पर्याप्त

5.अपर्याप्त

6. भोगभूमि पुरुष/स्त्री

संख्यात गुणा

∂ गुणा ($\frac{\text{आ}}{\partial}$)

∂ गुणा ($\frac{\text{पल्य}}{\partial}$)

www.JainKosh.org

असंज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज

7. नपुंसक → 8. पुरुष → 9. स्त्री

संख्यात गुणा संख्यात गुणा संख्यात गुणा

www.JainKosh.org

10.
व्यन्तर देव

संख्यात गुणा

11.
ज्योतिषी देव

संख्यात गुणा

12.
असंज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन पर्याप्त

संख्यात गुणा

13.
असंज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन अपर्याप्त

www.JainKosh.org

क्र.	पद	गुणकार
1	संज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज नपुंसकवेदी	स्तोक
2	संज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज पुरुषवेदी	संख्यात गुणा
3	संज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज स्त्रीवेदी	संख्यात गुणा
4	संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन पर्याप्त	संख्यात गुणा
5	संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन अपर्याप्त	∂ गुणा $\binom{\text{आ}}{\partial}$
6	भोगभूमिया पंचेन्द्रिय पुरुषवेदी या स्त्रीवेदी	∂ गुणा $\binom{\text{प}}{\partial}$
7	असंज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज नपुंसकवेदी	संख्यात गुणा
8	असंज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज पुरुषवेदी	संख्यात गुणा
9	असंज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भज स्त्रीवेदी	संख्यात गुणा
10	व्यन्तर देव	संख्यात गुणा
11	ज्योतिषी देव	संख्यात गुणा
12	असंज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन पर्याप्त	संख्यात गुणा
13	असंज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छन अपर्याप्त	संख्यात गुणा

नोट — गर्भज सारे पर्याप्त ही होते हैं । इसलिए गर्भज के साथ अपर्याप्त / पर्याप्त नहीं दिया है ।
सम्मूर्च्छन जन्म वाले नपुंसक ही होते हैं । इसलिए सम्मूर्च्छन के साथ वेद नहीं लिखा है ।
भोगभूमिया जीवों से भी व्यंतर देव अधिक होते हैं ।

www.jainkosh.org
www.free-power-point-templates.com

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889